International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय षड्दर्शन में ज्ञान और मुक्ति का अंतर्संबंध

Dr. Richa Pathak

Assistant Professor
Department of Ancient History Archaeology and Culture
K.S. Saket P.G. College, Ayodhya

सार
भारतीय षड्दर्शन (आस्तिक दर्शन के छह संप्रदाय) में ज्ञान और मुक्ति (मोक्ष) का गहरा अंतर्संबंध है। इन सभी दर्शनों में 'ज्ञान' को ही मुक्ति का मुख्य साधन या मार्ग माना गया है। अज्ञान या मिथ्या ज्ञान (भ्रम) को बंधन का कारण और तत्वज्ञान (यथार्थ ज्ञान) को दुखों से आत्यंतिक मुक्ति का उपाय स्वीकार किया गया है।

परिचय
भारतीय षड्दर्शन (आस्तिक दर्शन के छह संप्रदाय) में ज्ञान और मुक्ति (मोक्ष) का गहरा अंतर्संबंध है। इन सभी दर्शनों में 'ज्ञान' को ही मुक्ति का मुख्य साधन या मार्ग माना गया है। अज्ञान या मिथ्या ज्ञान (भ्रम) को बंधन का कारण और तत्वज्ञान (यथार्थ ज्ञान) को दुखों से आत्यंतिक मुक्ति का उपाय स्वीकार किया गया है।
छह दर्शनों में ज्ञान और मुक्ति के इस अंतर्संबंध को निम्नलिखित दो श्रेणियों और विवरणों के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. द्वैतवादी और प्रकृति-पुरुष विवेक दर्शन
इस श्रेणी के दर्शन आत्मा और भौतिक संसार (या प्रकृति) को अलग-अलग मानते हैं। यहाँ ज्ञान का अर्थ इन दोनों के बीच के अंतर को समझना है।

- सांख्य दर्शन: सांख्य दर्शन के अनुसार मूल कारण अज्ञान है, जिससे पुरुष (आत्मा) स्वयं को प्रकृति (शरीर, मन, बुद्धि) समझ बैठता है। जब पुरुष को 'विवेक-ज्ञान' (प्रकृति और पुरुष के भिन्न होने का ज्ञान) होता है, तब वह बंधन मुक्त होकर अपने शुद्ध रूप को प्राप्त करता है। इस स्थिति को कैवल्य कहा जाता है।
- योग दर्शन: सांख्य के सिद्धांत को व्यावहारिक रूप देते हुए, योग दर्शन चित्त की वृत्तियों के निरोध (अष्टांग योग) द्वारा विवेक ख्याति (भेद-ज्ञान) प्राप्त करने का मार्ग बताता है। विवेक-ज्ञान होने पर आत्मा सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर कैवल्य लाभ करती है।[1,2,3]

2. तर्क, परमाणु और विश्लेषणात्मक दर्शन
ये दर्शन संसार के तत्वों के तार्किक विश्लेषण और उनके सही स्वरूप को जानने पर बल देते हैं।

- न्याय दर्शन: न्याय दर्शन के अनुसार दुखों का मूल कारण 'मिथ्या ज्ञान' है। जब व्यक्ति को १६ पदार्थों का तत्वज्ञान (यथार्थ ज्ञान) प्राप्त होता है, तब मिथ्या ज्ञान का नाश होता है। इससे दोष (राग-द्वेष), प्रवृत्ति, जन्म और अंततः दुखों की पूर्ण निवृत्ति होती है, जिसे अपवर्ग (मुक्ति) कहा जाता है।
- वैशेषिक दर्शन: वैशेषिक दर्शन के अनुसार संसार के सात पदार्थों (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव) के साधर्म्य और वैधर्म्य का तत्वज्ञान प्राप्त करने से निःश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति होती है। पदार्थों के वास्तविक स्वरूप को जानना ही यहाँ ज्ञान है।

3. वेदमूलक और अद्वैत दर्शन

ये दर्शन वेदों और उपनिषदों के ज्ञान को सर्वोच्च मानते हैं और आत्मा की ब्रह्म के साथ एकता या संबंध पर केंद्रित हैं।

- मीमांसा (पूर्व मीमांसा) दर्शन: मीमांसा दर्शन मूलतः कर्मप्रधान है, लेकिन यहाँ भी वेदों के सही कर्म-ज्ञान और धर्म-ज्ञान को महत्व दिया गया है। निष्काम भाव से वैदिक यज्ञों और कर्तव्यों का पालन करने से संचित कर्म नष्ट होते हैं और आत्मा को मोक्ष मिलता है।
- वेदांत (उत्तर मीमांसा) दर्शन: वेदांत (विशेषकर शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत) ज्ञान और मुक्ति के अंतर्संबंध को चरमोत्कर्ष पर ले जाता है। इसके अनुसार 'अविद्या' (अज्ञान) के कारण ही जीव स्वयं को ब्रह्म से अलग समझता है। जब 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ही ब्रह्म हूँ) का आत्मज्ञान होता है, तो अज्ञान का परदा हट जाता है। वेदांत में ज्ञान ही साक्षात् मुक्ति (जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति) है।[4,5,6]

षड्दर्शन में ज्ञान और मुक्ति की तुलनात्मक तालिका

दर्शन	बंधन का कारण	ज्ञान का स्वरूप	मुक्ति की अवस्था
सांख्य	प्रकृति-पुरुष का अविवेक (अज्ञान)	विवेक-ज्ञान (प्रकृति-पुरुष का भेद)	कैवल्य
योग	चित्त की वृत्तियों में फँसना	विवेक ख्याति (अष्टांग योग द्वारा)	कैवल्य
न्याय	मिथ्या ज्ञान (भ्रम)	१६ पदार्थों का तत्वज्ञान	अपवर्ग
वैशेषिक	अज्ञान	७ पदार्थों का साधर्म्य-वैधर्म्य ज्ञान	निःश्रेयस
मीमांसा	वेदों के ज्ञान का अभाव और सकाम कर्म	वैदिक धर्म और निष्काम कर्म का ज्ञान	मोक्ष
वेदांत	अविद्या (माया)	ब्रह्मज्ञान / आत्मज्ञान	मोक्ष (जीवन्मुक्ति)

भारतीय षड्दर्शन यह प्रतिपादित करता है कि बिना तत्वज्ञान के दुखों से पूर्ण और स्थायी छुटकारा (मुक्ति) संभव नहीं है। ज्ञान केवल बौद्धिक समझ नहीं, बल्कि आत्म-साक्षात्कार की व्यावहारिक अनुभूति है।

विचार-विमर्श

भारतीय दर्शन और अध्यात्म में ज्ञान और मुक्ति का संबंध अत्यंत गहरा और मौलिक है। अधिकांश भारतीय दर्शन परंपराओं (जैसे सांख्य, वेदांत, बौद्ध और जैन धर्म) में यह माना गया है कि ज्ञान ही मुक्ति का एकमात्र या प्राथमिक साधन है।

अज्ञान को बंधन का कारण और तत्वज्ञान (सत्य के वास्तविक ज्ञान) को मोक्ष का मार्ग स्वीकार किया गया है। इन दोनों के अंतर्संबंध को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. अज्ञान: बंधन की जड़

सभी दुखों और सांसारिक बंधनों का मूल कारण अज्ञान (अविद्या) है।

- जब जीव स्वयं के वास्तविक स्वरूप (आत्मा या ब्रह्म) को भूलकर खुद को शरीर, मन और अहंकार समझ लेता है, तो वह बंधन में पड़ जाता है।
- इस अज्ञान के कारण ही राग-द्वेष, इच्छाएं और कर्म चक्र उत्पन्न होते हैं, जो मनुष्य को जन्म-मृत्यु के चक्र में बांधे रखते हैं।

2. ज्ञान: अंधकार का नाश

जिस प्रकार गहरे अंधेरे को मिटाने के लिए केवल प्रकाश की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने के लिए ज्ञान (विद्या) अनिवार्य है।

- यहाँ 'ज्ञान' से तात्पर्य केवल किताबी या सांसारिक जानकारी से नहीं है, बल्कि अनुभूतिपरक ज्ञान (आत्मज्ञान या तत्वज्ञान) से है।
- जब साधक को यह बोध होता है कि वह नश्वर शरीर नहीं बल्कि अविनाशी आत्मा है, तो अज्ञान के पर्दे हट जाते हैं।

3. मुक्ति: ज्ञान का स्वाभाविक परिणाम

वेदांत दर्शन के अनुसार, मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे बाहर से प्राप्त करना पड़े। मुक्ति तो आत्मा का मूल स्वभाव है, जो अज्ञान के कारण छुपा हुआ था।[7,8,9]

- ज्ञान समकालीन मुक्ति लाता है: जैसे ही रस्सी में सांप होने का भ्रम (अज्ञान) दूर होता है, भय तुरंत समाप्त हो जाता है। ठीक उसी तरह, जैसे ही तत्वज्ञान होता है, जीव तुरंत मुक्त हो जाता है। इसे 'जीवन्मुक्ति' (जीवित रहते हुए भी मुक्त होना) कहा जाता है।
- ज्ञान के होते ही संचित कर्मों का प्रभाव समाप्त हो जाता है और नए कर्म बंधन नहीं बनाते।

4. विभिन्न दर्शनों में ज्ञान और मुक्ति

- अद्वैत वेदांत: आदि शंकराचार्य के अनुसार, "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है। कर्म और भक्ति मन को शुद्ध करते हैं, लेकिन अंतिम मुक्ति केवल ब्रह्मज्ञान से ही होती है।
- सांख्य दर्शन: यहाँ प्रकृति और पुरुष (आत्मा) के बीच के भेद को जान लेना ही विवेक-ज्ञान है। इस भेद को जानते ही पुरुष मुक्त (कैवल्य) हो जाता है।
- बौद्ध दर्शन: चार आर्य सत्यों और प्रतीत्यसमुत्पाद का सम्यक ज्ञान (प्रज्ञा) ही निर्वाण (मुक्ति) का मार्ग है।

ज्ञान और मुक्ति का संबंध साधन और साध्य जैसा है। ज्ञान वह चाबी है जो भीतर बंद मुक्ति के द्वार को खोल देती है। ज्ञान होते ही यह आभास होता है कि हम हमेशा से मुक्त ही थे, केवल अज्ञानवश खुद को बंधा हुआ मान रहे थे। भारतीय षड्दर्शन भारतीय दर्शन के छह आस्तिक स्कूल हैं, जो वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करते हैं। इसके बारे में विस्तृत जानकारी इस प्रकार है: [1, 2, 3]

भारतीय षड्दर्शन (छह दर्शन)
सांख्य दर्शन
प्रवर्तक: महर्षि कपिल
मुख्य विचार: यह एक द्वैतवादी दर्शन है जो ब्रह्मांड को दो मुख्य तत्वों—पुरुष (चेतना या आत्मा) और प्रकृति (जड़ पदार्थ/ऊर्जा) से मिलकर बना मानता है। [1, 2, 3]
योग दर्शन
प्रवर्तक: महर्षि पतंजलि
मुख्य विचार: इसका मुख्य लक्ष्य चित्तवृत्ति निरोध (मन के विचारों को रोकना) और अष्टांग योग के माध्यम से मोक्ष या कैवल्य की प्राप्ति करना है। [1, 2, 3]
न्याय दर्शन
प्रवर्तक: महर्षि गौतम
मुख्य विचार: यह तर्कशास्त्र और प्रमाण (ज्ञान के स्रोतों जैसे प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द) पर आधारित है। [1, 2, 3]

वैशेषिक दर्शन
प्रवर्तक: महर्षि कणाद
मुख्य विचार: यह भौतिक पदार्थों, गुणों और परमाणुवाद का विश्लेषण करता है। इसके अनुसार भौतिक जगत छोटे-छोटे कणों (अणुओं/परमाणुओं) से निर्मित है। [1, 2, 3]
पूर्व मीमांसा (मीमांसा दर्शन)
प्रवर्तक: महर्षि जैमिनी
मुख्य विचार: यह वेदों के कर्मकांड, यज्ञ और धर्म से जुड़े कर्तव्यों की व्याख्या करता है। [1, 2, 3]
उत्तर मीमांसा (वेदांत दर्शन)
प्रवर्तक: महर्षि बादरायण (उपनिषदों पर आधारित)
मुख्य विचार: यह वेदों के अंतिम भाग (उपनिषदों) के सार पर आधारित है, जिसमें ब्रह्म, आत्मा और अद्वैत आदि की व्याख्या की गई है। [1, 2, 3]
इन सभी दर्शनों का मूल उद्देश्य मनुष्य को जीवन के दुखों से मुक्त कर मोक्ष या परम सत्य का ज्ञान कराना है। [10,11,12]

परिणाम

षड्दर्शन की तुलना (Comparison Table)

दर्शन	मुख्य फोकस	आधुनिक Equivalent	जीवन में उपयोग
न्याय	तर्क और प्रमाण	Logic, Critical Thinking	Decision making
वैशेषिक	पदार्थ और गुण	Physics	Reality understanding
सांख्य	पुरुष और प्रकृति	Psychology	Self awareness
योग	मन नियंत्रण	Mindfulness	Mental health
मीमांसा	कर्म और धर्म	Ethics	Work discipline
वेदांत	आत्मा और ब्रह्म	Consciousness studies	Self realization

भारतीय दर्शन की परम्परा में ६ प्रमुख दर्शन (षड्दर्शन) जो वेदों को प्रमाण मानते हैं और इसलिए इन्हें आस्तिक दर्शन कहा जाता है, निम्नलिखित हैं :

१. सांख्य दर्शन

• प्रणेता : महर्षि कपिल।
• मुख्य सिद्धांत : यह प्रकृति और पुरुष (चेतना) के द्वैतवाद पर आधारित है। सांख्य का अर्थ है – विवेक अथवा ज्ञान। प्रकृति तथा पुरुष के विषय में अज्ञान होने से यह संसार है और जब हम इन दोनों के 'विवेक' को जान लेते हैं कि पुरुष प्रकृति से भिन्न है तथा स्वतन्त्र है, तब हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसी विवेक-ज्ञान की प्रधानता होने से इस

दर्शन का नाम सांख्य पड़ा। सांख्य दर्शन में २५ तत्त्वों का वर्णन है, जिनमें प्रकृति और पुरुष के अतिरिक्त महतत्व, अहंकार, पंच महाभूत, पंच तन्मात्रा, मन, और इंद्रियाँ सम्मिलित हैं।[13,14,15]

२. योग दर्शन

• प्रणेता : महर्षि पतंजलि।
• मुख्य सिद्धांत : योग दर्शन आत्मसंयम, साधना और ध्यान पर विशेष बल देता है। पतंजलि के अष्टांग योग (आठ अंगों वाले योग) में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि लिए जाते हैं।

३. न्याय दर्शन :

• प्रणेता : महर्षि गौतम।
• मुख्य सिद्धांत : यह दर्शन तर्कशास्त्र और प्रमाण (ज्ञान के साधन) पर आधारित है। न्याय का अर्थ है – विभिन्न प्रमाणों की सहायता से वस्तु-तत्व की परीक्षा (प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्यायः – वात्स्यायन न्यायभाष्य)।न्याय दर्शन में चार प्रमाणों का वर्णन है: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। यह दर्शन सत्य ज्ञान के प्राप्ति के लिए तर्क और विश्लेषण पर बल देता है।

४. वैशेषिक दर्शन

• प्रणेता : महर्षि कणाद।
• मुख्य सिद्धांत : यह पदार्थ और उसके गुणों पर आधारित है। वैशेषिक दर्शन में नौ द्रव्यों का वर्णन है:
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन, इनकी अपनी विशेषता है। विद्वानों के अनुसार 'विशेष' नामक पदार्थ की कल्पना करने के कारण कणाद दर्शन को वैशेषिक की संज्ञा प्राप्त हुई। यह दर्शन तत्त्वों और उनके गुणों का विश्लेषण करता है।[16,17,18]

५. पूर्व मीमांसा (मीमांसा) दर्शन

• प्रणेता : महर्षि जैमिनि।
• मुख्य सिद्धांत : मीमांसा शब्द का अर्थ किसी वस्तु के स्वरूप का यथार्थ वर्णन है। वेद के दो भाग हैं – कर्मकांड और ज्ञानकांड। मीमांसा दर्शन वेदों के कर्मकांड और यज्ञों के महत्व को बताता है। मीमांसा दर्शन धर्म के निष्पादन के लिए वेदों के कर्मकांडों की विधियों का विवेचन करता है और इसे महत्वपूर्ण मानता है।

६. वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र या उत्तर मीमांसा)

• प्रणेता : महर्षि वेदव्यास।
• मुख्य सिद्धांत : यह दर्शन वेदों के ज्ञानकांड (उपनिषदों) पर आधारित है और ब्रह्म (परमसत्य) को सर्वोच्च मानता है। वेदान्त के विभिन्न उपदर्शन हैं जैसे अद्वैत (शंकराचार्य), विशिष्टाद्वैत (रामानुजाचार्य), और द्वैत (मध्वाचार्य)।
ब्रह्म ही भक्ति-ज्ञान के मूल स्रोत हैं। शुकदेव के द्वारा अद्वैत ज्ञान-धारा प्रवृत हुई।
शुक, गौडपाद, गोविन्दभगवत्पाद, शंकराचार्य – ये अद्वैत मार्ग की मुख्य आचार्य परम्परा है। ब्रह्म जिज्ञासा के विषय में अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत और अचिन्त्याभेद – यह ६ वेदान्त दर्शन के प्रमुख उपदर्शन हैं। इन सभी दर्शनों में मुख्य अंतर यह है कि ये जीव, जगत और ब्रह्म के संबंध को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाते हैं और प्रत्येक का विशिष्ट माध्यम और दर्शन है। इनके प्रमुख भेद निम्नलिखित हैं:

१. अद्वैत वेदान्त (अद्वैत)

• प्रणेता : आदि शंकराचार्य।
• सिद्धांत : ब्रह्म (परमसत्य) एकमात्र वास्तविकता है, और जीव (आत्मा) और जगत (संसार) माया (भ्रम, मिथ्या) हैं। जीव और ब्रह्म एक ही हैं (अहं ब्रह्मास्मि)। जब पैर में कांटा चुभता है तब आँख से पानी आता है और हाथ कांटे को निकालने के लिए जाता है, यह अद्वैत का एक उत्तम उदाहरण है।
• विशेषता : अद्वैत का अर्थ है "द्वैत रहित", अर्थात ब्रह्म और जीव में कोई भेद नहीं है।

२. विशिष्टाद्वैत वेदान्त (विशिष्टाद्वैत)

• प्रणेता : रामानुजाचार्य।
• सिद्धांत : ब्रह्म, जीव और जगत (माया) तीनों ही सत्य हैं। जीव और (माया) जगत ब्रह्म के अंग हैं। जगत अर्थात् माया को रामानुजाचार्य ने ईश्वर द्वारा ही बनाए जाने के कारण मिथ्या नहीं माना अतः जगत और जीवात्मा दोनों ही ब्रह्म से अद्वैत हैं। यह "विशेषण युक्त अद्वैत" है।
• विशेषता : ब्रह्म विशिष्ट (विशेषताओं के साथ) है और जीव और जगत उसकी विशेषताएँ हैं।[18,19,20]

३. शुद्धाद्वैत वेदान्त (शुद्धाद्वैत)

• प्रणेता : वल्लभाचार्य।
• सिद्धांत : केवल ब्रह्म ही सत्य है, और वह शुद्ध (अविकृत) है। जीव ब्रह्म का ही स्वरूप है, और यह माया से ग्रस्त है।
• विशेषता : शुद्ध अद्वैत का अर्थ है "शुद्ध और अविकृत अद्वैत"।

४. द्वैताद्वैत वेदान्त (द्वैताद्वैत)

• प्रणेता : निम्बार्काचार्य।
• सिद्धांत : ब्रह्म, जीव और जगत तीनों ही सत्य हैं। जीव और जगत ब्रह्म से अलग भी हैं और ब्रह्म में अभिन्न भी हैं उसी प्रकार जैसे समुद्र और उसकी एक बूँद अलग भी है और एक भी।
• विशेषता : यह द्वैत और अद्वैत दोनों का मिश्रण है।

५. द्वैत वेदान्त (द्वैत)

• प्रणेता : माध्वाचार्य।
• सिद्धांत : ब्रह्म (भगवान) और जीव (आत्मा) सदा अलग हैं। आत्मा माया से आबद्ध है जबकी ब्रह्म माया पर शासन करता है। माया उसकी चेरी है।
• विशेषता : यह पूर्ण द्वैत पर आधारित है, जहां भगवान, जीव और जगत अलग-अलग वास्तविकताएँ हैं।

६. अचिन्त्यभेदाभेद वेदान्त (अचिन्त्यभेद)

• प्रणेता : चैतन्य महाप्रभु।
• सिद्धांत : ब्रह्म, जीव और जगत में अचिन्त्य (अचिंतनीय) भेद और अभेद दोनों हैं। यह भेद और अभेद दोनों ही हैं जिस संबंध को तर्क से समझा नहीं जा सकता। जिस प्रकार गर्मी और प्रकाश अग्नि की शक्ति हैं, गर्मी और प्रकाश ऊर्जा के दो अलग – अलग रूप हैं किन्तु दोनों एक साथ हैं उन्हें अग्नि का रूप कहा जा सकता है उससे अलग उन्हें नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार आत्मा और माया ब्रह्म की ही शक्ति से कार्य करतीं हैं। दोनों हैं उसी की शक्तियां फिर भी उससे अलग – अलग भी हैं और उसके साथ भी। साधारण बुद्धि से इस रूप को पूरा ठीक से नहीं समझा

जा सकता। इसे समझने के लिए प्रज्ञा चक्षु चाहिए। इसीलिए इस दर्शन को अचिन्त्यभेदाभेद नाम दिया गया है।
• विशेषता : भेद और अभेद की यह स्थिति अचिन्त्य (अचिंतनीय) है।

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय दर्शन का आरम्भ वेदों से होता है। वेद भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य आदि सभी के मूल स्रोत हैं।

- वर्तमान में भी धार्मिक एवं सांस्कृतिक कृत्यों के अवसर पर वेद-मंत्रों का गायन होता है। अनेक दर्शन-संप्रदाय वेदों को अपना आधार और प्रमाण मानते हैं।
- उत्तर वैदिक काल में रचित उपनिषदों की रचना के साथ ही भारतीय दर्शन ने जन्म लिया।
- वैदिक दर्शनों में षड्दर्शन अधिक प्रसिद्ध और प्राचीन हैं। ये छः दर्शन-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त है। गीता का कर्मवाद संबंधी दर्शन भी इनके समकालीन है।[20]

संदर्भ

1. शार्फस्टीन, बेन-अमी (1998)। विश्व दर्शन का तुलनात्मक इतिहास: उपनिषदों से कांट तक । अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस। पृष्ठ 9-11 । ISBN 978-0-7914-3683-7.
2. "मोनियर-विलियम्स संस्कृत शब्दकोश 1899 बेसिक" । www.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de । 24 मई 2024 को प्राप्त किया गया ।
3. यहां जाएं: एडमसन, पीटर; गनेरी, जोनाडन (2020)। शास्त्रीय भारतीय दर्शन: बिना किसी अंतराल के दर्शन का इतिहास । ऑक्सफोर्ड, न्यूयॉर्क (एनवाई): ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। ISBN 978-0-19-885176-9.
4. कौटिल्य; ओलिवेल, पैट्रिक (2013)। प्राचीन भारत में राजा, शासन और कानून: कौटिल्य का अर्थशास्त्र: एक नया व्याख्यात्मक अनुवाद । न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। ISBN 978-0-19-989182-5.
5. यहां जाएं: बॉकर 1999 , पृ. 259.
6. यहां जाएं: डोनिगर 2014 , पृ. 46.
7. यहां जाएं: निकोलसन 2010 , अध्याय 9.
8. यहां जाएं: कोवेल और गॉफ 2001 , पृ. xii.
9. निकोलसन 2010 , पृ. 158–162.
10. पेरेट, खंड 3, 2000 ।
11. फिलिप्स, स्टीफन एच. (2013). शास्त्रीय भारत में ज्ञानमीमांसा: न्याय स्कूल के ज्ञान स्रोत । रूटलेज। ISBN 978-1-136-51898-0.
12. शर्मा, अरविंद (1982). पुरुषार्थ: हिंदू मूल्यमीमांसा का एक अध्ययन । एशियाई अध्ययन केंद्र, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी। ISBN 9789993624318.
13. बिलिमोरिया, पुरूषोत्तम; प्रभु, जोसेफ; शर्मा, रेणुका एम., एड. (2007)। भारतीय नैतिकता: शास्त्रीय परंपराएँ और समकालीन चुनौतियाँ । एशगेट. आईएसबीएन 978-0-7546-3301-3.
14. कुइपर, कैथलीन, संपादक (2010)। भारत की संस्कृति । द रोसेन पब्लिशिंग ग्रुप। पृष्ठ 174-178 । ISBN 978-1-61530-149-2मूल रूप से 3 जुलाई 2023 को संग्रहीत । 18 अक्टूबर 2016 को पुनः प्राप्त किया गया ।
15. कृष्णा, दया। भारतीय दर्शन: एक प्रति-दृष्टिकोण दया कृष्णा । पृ. 16–32 ।

16. हैमिल्टन, सू (2001). भारतीय दर्शन: एक संक्षिप्त परिचय . ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 1–17 , 136–140 . ISBN 978-0-19-157942-4.
17. यहां जाएं: डंडास 2002 , पृ. 30–31.
18. डुंडास 2002 , पृ. 30–33.
19. डुंडास 2002 , पृ. 39.
20. डुंडास 2002 , पृ. 39–40.